‘Research Journey’ International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 1 Issue. 1
ISSN 2348-7143 (Online)
Jan-March - 2014

सूचना प्रौद्योगिकी और जन मिडिया

प्रा. डॉ. तुकाराम दौड
विभागाध्यक्ष,
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव.
tvdaud@rediffmail.com
Mob. No. 9420438453

सारी दुनिया को सूचना-प्रौद्योगिकी विज्ञानक्रांतीने समस्त विश्व को एक परिवार के रुप में समेट दिया है। ऑनलाईन पत्रकरिता इलेक्ट्रॉनिक्स मीडीया का हिस्सा बन गया हैं। सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व इसलिए भी अधिक बढा हैं, क्योंकी इसने मानव जीवन से जुडे प्रायः समस्त आयामों पर अपना प्रभाव स्थापित किया हैं। आज भारत में शिक्षा एवं मीडिया क्षेत्र में युवक,युवतीयाँ सूचना प्रौद्योगिकी मदत से जनमिडया में शानदार कैरीअर का निर्माण कर सकते हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में सूचना प्रौद्योगिकी और जनमीडिया की आवश्यकता तेजी के साथ उभर कर हमारे समक्ष आयी है और नई प्रौद्योगिकी की चुनौती खडी हो चूकी हैं। इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में नई पीढी आज भी ज्यादा तर सूचना या पाठयक्रम सामग्री की तलाश में इन साईटों पर विचरण करती है। तकनिक कभी भी किसी विधा की दूश्मन नही होती वह उसके प्रयोगकर्ता पर निर्भर है कि वह उसका कैसा इस्तेमाल करता है। समाचारपत्र तो नेट और मोबाईल पर पढ सकते है और आपके टेलिव्हीजन सेट पर भी देख सकते हैं इस आलेख में सूचना प्रौद्योगिकी और जन मिडीया पर रोशनी डाली गयी है।

प्रस्तावना : -

इन दिनो सूचना और संचार के क्षेत्र में आए क्रांतीकारी परिवर्तनो की चर्चा चारों ओर है। यदि इस एक क्षेत्र की संक्षेप में बात की जाए तो जो दृश्य उभरता है वह आश्चर्य से भर देनेवाला है। दूरदर्शन और दूरभाष जैसे जादूई अविष्कार भी नई खोजों के आगे अब बासी हो गये हैं। ई-मेल, इंटरनेट, वेबसाईट, साफ्टवेअर, स्कैन, सायबर तकनिकी, आदि शब्द महानगरों में ही नहीं अपितु कस्बो में भी जाने-पहचाने बन गये। अगले कूछ वर्षो में कॉम्प्यूटर हमारी आवाज की निर्देश पर मुद्रण कर सकेगा यानि तब टाईप के बोर्ड पर उंगलियाँ घुमाने की जरुरत भी खत्म होने वाली है। आनेवाले दिनों में सूचना प्रौयोगिकी विज्ञान हमें किन-किन उपकरों से लैस कर देगा। भारत ने विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगती की है। पर अपने देश में एक समुदाय ऐसा है जो न चाहते हुए भी इन उपलब्धियों की पहूँच से दूर है। सूचना प्रौद्योगिकी उपलब्धियों और उसकी सकारात्मक भूमिका से जनसामान्य तक पहूँचाने के आंदोलनो की जरुरत है। नयी सदी में सूचना तकनिकी और प्रौद्योगिकी को गंभीरता से लेना होगा और मल्टी मीडिया अखबार के अतिरिक्त रेडिओ, टी.व्ही., व्हिडीओ, इंटरनेट, पोर्टल आदि का यथेष्ट अभ्यास करना अनिवार्य हो गया है। आनेवाले दशकों में सभी तरह की पत्रकारिताँए मल्टी मीडिया में बदल जायेंगी। कॅम्प्युटर के कारण मुद्रणकला, शीर्षकीकरण और पृष्ठ विन्यास की पूरी तरह बदल गयी है। संवाददाता को सूचना

प्रौद्योगिकी और जनसंचार विज्ञान का यह नया संज्ञापन प्राप्त करना होगा। सूचना क्रांतीने संचार के क्षेत्र में बदलाव लाकर पूरी दूनिया के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनिती व्यवहार को बदल दिया है। इससे न्यु मीडिया का व्यक्तीमत्व सूचनाधिष्ठीत बन चूका है।

कम्प्यूटर और इंटरनेट :-

सूचना क्रांती के चौतरफा विस्तार कम्प्यूटर के बहुआयामी प्रयोगों को दिशा मिली है वस्तुत: कम्प्युटर वह मशीन है जो निर्देशित प्रोग्रामव्दारा नियंत्रित कोडेड सूचना (डेटा) पर कार्य करती है। वर्ज 1946 में विश्‍व का सर्वप्रथम पूर्णतया इलेक्ट्रॉनिक डिजीटल कम्प्यूटर इलेक्ट्रॉनिक न्यूमेरिकल इंटीग्रेटर एंड कैलक्युलेटर (इनिनॅक) बनाया गया अपनी प्रथम पीढी का यह कम्प्यूटर था। आज दुनिया भर में मायक्रो कम्प्यूटर , मिनी कम्प्यूटर, सुपर मिनी कम्प्यूटर, मेन फ्रेम कम्प्यूटर, सुपर कम्प्यूटर, डिजिटल कम्प्यूटर, एटॅमिक कम्प्यूटर, हायब्रीड कम्प्यूटर , आदी सर्वत्र उपलब्ध है। भारत में कम्प्यूटर विकास के युग में अभी एक महत्वपूर्ण छलाँग लगाई है। भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर के अलग-अलग भाषाओं के सॉफ्टवेअर पर आई.आई.टी. ने विकसीत किये है। बंगलौर स्थित " सेंटर फॉर डेव्हलपमेंट ऑफ एडवांस कम्प्यूटिंग " (सीडेक) व्दारा एक नया सुपर कम्प्यूटर का अविष्कार किया है जिसका नाम परम रखा गया है। इसकी क्षमता एक टेरीफ्लॉफ है। इसके निर्माण में लगभग 1 करोड डॉलर खर्च हुआ है। कम्प्यूटर के दखल, सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव ने हमारे समुचे मानवीय जीवन को एक नयी दिशा प्रदान की है। इंटरनेट से आज समूचे विश्‍व में 50 हजार से भी अधिक कम्प्यूटर नेटवर्क जुडे है। जबकि लगभग 5 करोड लोग इसमें सक्रिय रुप से शामील है। इसी को अमेरिका के उपराष्ट्रपती अलगोर ने इन्फॉमेशन हायवे कहाँ था। यहाँ दिलचस्प तथ्य यह है की इंटरनेट में कोई प्रशासक या अधिकारी नही है। फिर भी अमेरिका रक्षा विकास से शुरु हूई यह चिनगारी आज आन्तरराष्ट्रीय सुपर मार्केट तक अपनी जबरदस्त पैठ बना चुकी है। इंटरनेट के माध्यम से आज हम दुनिया में किसी से, किसी भी तरह की, कोई भी सूचना आदान-प्रदान कर सकते है। हॉलीवुड, बॉलीवुड फिल्में इंटरनेट सूचना प्रौद्योगिकी व्दारा देख सकते हैं। इंटरनेट पर आधिकांश नेटवर्क कुछ खास फाईलों को डेटाबेस, प्रोग्राम्स या ई-मेल के रुप में दूसरे नेटवर्क को भी उपलब्ध कराते है। अनेक कम्पनीयाँ ऑनलाईन सेवॉए मासीक शुल्क लेकर एक कन्फेशन के व्दारा अपने सदस्यों तक पहुँचाती है। इनमे ऑनलाईन कॉन्फेंसिग, इलेक्ट्रॉनिक मेल, वीडीओ क्लिप, टी.वी., रेडिओ, विज्ञापन इत्यादी की सूचनाएँ होती है। ब्रिटेन में 10 लाख से ज्यादा लोग सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग से रोजगार पा रहे हैं। इनमे से लगभग एक तिहाई लोग सीधे तौर पर कम्प्यूटर और सॉफ्टवेअर के व्यवसाय से जुडे हैं। सन 2002 -93 में भारतीय निर्यात का 30 फीसदी हिस्सा सूचना प्रौद्योगिकी एवं इससे संबंधीत क्षेत्रों पर आधारीत है। भारत सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी को महत्व दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी भारत सरकार का मंत्रालय आम जनता के मध्य सूचना प्रौद्योगिकी संबंधीत शिक्षा का प्रसार, सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारीत आर्थिक विकास को

प्रोत्साहन दूर- दराज तथा ग्रामीण क्षेत्रों मे इसकी स्थापना करना आदि कार्य को प्राथमिकता देता है। भारत सरकार व्दारा सन 2008 तक सब के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का नारा भी दिया है। भारतीय मनोरंजन उद्योग आज विश्व बाजार मे अपनी बुलंद मौजुदगी दर्ज कर चुका है। सूचना प्रौद्योगिकी तथा कम्प्युटर के कंधो पर टिका है। ब्रिटेन में पहली राष्ट्रीय इंटरॲक्टीव्ह डिजिटल टेलिविजन सेवाँए का भी शुभारंभ हो चूका है। जन मिडिया विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक मिडीया के साथ इसके तालमेल ने प्रगती मार्ग प्रशस्त किये है। सूचना प्रौद्योगिकी की ताजा हवाओं में उपग्रह संचार मिडिया रेडिओ, टेलिविजन, कम्प्युटर, इंटरनेट मोबाईल संस्कृति सेवाओंने जनमिडिया का एक ऐसा सुनहरा जाल बुना है। इस संदर्भ मे मॉर्शल मॅक्लूहान ने कहाँ है कि " ग्लोबल टू व्हिलेज" का संकेत दिया है। टेलिकॉस्ट, विडिओ टेक्स, डायरेक्ट ब्रॉडकॉस्टींग सॅटेलाईट सेवाओ का सन 1980 में युरोप में विस्तार हुआ। डिजिटल तकनिकी ने सूचना क्रांती के क्षेत्र में नई उपलब्धियाँ प्रदान की है। समुची दुनिया से आनेवाली सूचनाएँ हमारी इंद्रियों तक उर्जा के संकेतकों के रुप में पहुँचाती है। रेडिओ, टेलिविजन, इंटरनेट टीवी आदी जनमिडीया में डिजिटल सूचना प्रौयोगिकी का उपयोग किया जा रहा है। इंटरनेट ने विश्व में जैसा क्रांतिकारी परिवर्तन किया वैसा किसी की दूसरी टेक्नॉलॉनी ने नही किया। 1972 में बोल्ट बेरैनेक और न्यूमैन से जुडे वे रेटो मालिनसन ने आरपारनेट अविष्कारकर्ताओं की सूचना के आदान प्रदान की आवश्यकताओं को समझते हूए ई-मेल भेजने और पढने का पहाला कार्यक्रम तैयार किया यहाँ से टेलनेट सेवाएँ जोन पोस्टेलने शुरु की। 1966 में अपना पहला कम्प्युटर नेटवर्क तैयार किया और इसको आरपानेट नाम से जाना जाता है। 1990 के दशक के आरंभ में इंटरनेट पर सूचना प्रस्तुति के नये तरीके सामने आये। टिम बर्नर ली ने वर्ल्ड वाईड वेब (www) का 1990 में अविष्कार करके सूचना प्रस्तुति का एक नया तरीका सामने रखा। 1993 में ग्रॉफिकल वेब ब्राऊजर का अविष्कार इंटरनेट क्षेत्र में हुआ इसका अविष्कार इतिनोयस विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सुपर कम्प्युटर व्यवहार केंद्र में किया गया मोजाइक का विकास एंडरसन के नेतृत्व में कार्यरत एकदल ने किया। इस आविष्कार के तुरंत बाद एंडरसन ने उक्त केंद्र से सबंध तोड दिये और अपनी एक कम्पनी स्थापित की। उस समय नाम मोजाइक कम्युनिकेशन रख दिया है। जिससे आजकल नेटस्केप कम्युनिकेशन के नाम से जाना जाता है। इंटरनेट टेलिफोन्स, ई-कॉमर्स, सेवाओं का उपयोग इस मल्टी मिडिया में होने लगा है। भारत में इंटरनेट का प्रारंभ आठवे दशक में हुआ है। भूमंडलीकरण से भारत में विदेश संचार निगम लिमीटेड ने अपनी सेवॉए 15 अगस्त 1995 से शुरु की। 1999 में टेलिकॉम क्षेत्र निजी कम्पनीयाँ आ चुकी है। देश के अनेक राज्य सरकार व्दारा सूचना प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन देनेवाली नीतियाँ अपनाई है। इससे सूचना शिक्षा को बढावा मिल रहा है।

सूचना प्रौद्योगिकी और मोबाईल मिडीया :-

मोबाईल एक जनमिडीया है। मोबाईल मिडीया पर टीवी का लाईव्ह प्रसारण हम देख सकते है। नब्बे के दशक में भारत में मोबाईने प्रवेश किया। पहले यह मोबाईल इतना महंगा था की यह तंत्रज्ञान कुछ लोगों का साधन बन जाएगा

ऐसा लगता था। लेकिन उसकी किंमते और कॉल दर कम हो गये और अमीर लोगों के पास दिखनेवाला यह मोबाईल मिडीया चारो तरफ फैल गया और झाडूवाले के पास भी मोबाईल दिखने लगा है। पहले टिवी से दुनिया का वैश्वीक ग्राम बन गया था लेकीन सूचना प्रौद्योगिकी क्रांतिने मोबाईल के माध्यम से सारी दुनिया को मुठ्ठी में बंद कर दिया है। मोबाईल मिडया यह सिर्फ संपर्क का साधन नहीं बना तो वह एक मल्टीमिडया बना है। यह माध्यम अब जनमिडीया बन गया है। भविष्य में मोबाईल मिडीया छोटे बच्चे से लेकर बुढे लोगों तक पसंदीदा मिडीया बनेगा। जैसे मोबाईल मिडिया के व्दारा ऑनलाईन संस्कारण और टीवी के इंटरनेट एडिशन है वैसे उनके मोबाईल एडिशन भी शुरु हो जायेंगे। इस प्रक्रिया की शुरुवात हो चूकी है। अलजजीरा ने (गल्फ टीवी चैनल) अपनी मोबाईल एडिशन शुरु की है। दक्षिण कोरीया में एक टीवी चैनल का प्रसारण मोबाईल व्दारा किया जा रहा है। भारत में अब तक उपलब्ध ४ जी नेटवर्क मुख्यतः वॉइस सेवा के लिए है। लाईव्ह टिवी, व्हिडीओ कॉन्फेंसिंग और मोबाईल इंटरनेट जैसी सेवाएँ आती है। मोबाईल फोन में सभी संचार माध्यम उपलब्ध है। इस उपकरण के माध्यम से आप बातचित कर सकते है। तस्वीरे निकाल सकते है। 3 जी या 4 जी तंत्रज्ञान के व्दारा ये सभी मिडीयो का मोबाईल व्दारा उपयोग कर सकते हैं। सिनेमा चैनल भी देख सकते है इसीलिए यह एक ऑल इन वन जनमिडीया है। ये मोबाईल उपकरण रॉकेट जैसा है यह रॉकेट अपनी पॉकीट समा रहा है। इन्फोसिस के संस्थापक और आयटी प्रमुख नंद निलकेणी के अनुसार मोबाईल फोन सशक्तीकरण का एक साधन बन गया है। अरब समाचार नेटवर्क अल-जजिरा ने फिल्मीस्तानी व्दारा गाजापट्टी में घेराबंदी की सही खबरे मोबाईल के माध्यम से लोगोंतक पहूँचाया। वहाँ के पारंपारिक मिडीया को सही खबरे दिखाने पे पाबंदी थी इसलिए मोबाईल सिर्फ एक फोन उपकरण नही रहा, यह समाज के सर्शक्तिकरण का एक साधन बन गया है। यह सूचना प्रौद्योगिकी विज्ञान से हुआ है। एसएमएस टेक्स मेसेजिंग, मोबाईल समाचार डिलेव्हरी, मोबाईल व्दारा लाईव्ह रिर्पोटींग, सिटीजन्स पत्रकारीता, एसएमएस के माध्यम से अन्य महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते है। ऑडिओ पोडकास्ट या वॉईसमेल , तस्वीरे फोटो शेअरिंग या फोटो ब्लॉकींग , सेलफोन टिवी आदी के लिए मोबाईल इस्तेमाल हो रहा है। सही मायने में अभी मोबाईल ई-समाज विकसीत होने लगा है , ई-संस्कृति विकसीत की स्थिती मोबाईल जनमिडीया ने बनाई है, यह सूचना प्रौद्योगिकी का आविष्कार है। मोबाईल जनमिडीया की सात विशेषताऍ एक जनमिडीया के रुप में मोबाईल में सात अव्दितीय विशेषताऍ है।यह निम्नलिखीत है।

1. यह एक व्यक्तिगत आधुनिक मास मीडीया है।
2. मोबाईल अपने साथ हमेशा रहने का स्थायी मीडीया है।
3. मोबाईल यहाँ हमेशा चालू रहने वाला मीडीया है।
4. मोबाईल से भूगतान कर सकते है।
5. मोबाईल से सृजनात्मक प्रेरणा का विकास होता है।

6. मोबाईल सही दर्शकमापक है।

7. मोबाईल एक सामाजिक संदर्भ का जनमिडीया है।

मोबाईल मीडीया न्यु मीडीया का मायाजाल है। ई-बँकींग, ई-कॉमर्स, ई-शॉपींग, ई-प्रशासन आधारीत सुविधाएँ डीटीएच , ऑनलाईन शिक्षा , ई-मेल चॅट और इन्स्टैंट मेसेजिंग, यु-टयुब, आदि के लिए मोबाईल मिडीया का उपयोग कर सकते है। एलन मूरने ऑक्सफोर्ड विश्‍व विद्यालय में मोबाईल सोशल नेटवर्क विषय पर छोटे पाठयक्रम में व्याख्यान दिया था। उसमें उन्होने जनमिडीया के सात रुप का सिध्दांत बताया। उसमें मोबाईल को उन्होने जनमिडीया का सातवाँ रुप बताया है। प्रिंट मिडीया,रेकॉर्डिग,फिल्म, रेडिओ, टीवी, इंटरनेट मोबाईल एलन मूर ने जो सात मिडीया की परिभाषा की है उसमें मोबाईल को सातवाँ मिडीया बताया है। दूनिया मे इंटरनेट उपयोगकर्ता दो अरब से ज्यादा है और मोबाईल इंटरनेट जनमिडीया तीन अरब तक पहुंचे गया है। मोबाईल मिडीया कितीनी शीघ्र गती से बढ रहा है। यह सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति से पता चलता है।

सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मिडीया :-

सोशल नेटवर्कींग मिडीया आज तक की पूरी सूचना प्रौद्योगिकी टेक्नॉलॉजी के मंथन से निकला हूआ वह अमृत है। जिसने सारी दूनिया को चकीत किया है इंटरनेट आधारीत सोशल नेट वर्कींग मानवता के लिए वरदान साबीत हुआ है। सोशल मिडीया ज्ञान , मनोरंजन, शिक्षा विचारों का आदान प्रदान दूरीयाँ बाटने का माध्यम बन गया है। प्रसिध्द संचार विश्‍लेषक मार्शल मॅकलूहन की धारणाएँ ग्लोबल विलेज और मिडीया इज द मैसेज यह संदेश आज के युग में प्रचलित हुआ है। यह सब संचार साधनों से हुआ है। इंटरनेट के माध्यम के रुप में सोशल मिडीया में लोगों को आपस में जोड़ने के कार्य को आसान बना दिया है। सोशल मिडीया का ही कमाल है कि एक भारतीय अमेरिका में अपने मित्र से कुछ ही पल में आसानी से संपर्क कर लेता है। सोशल मिडीया एक सागर की तरह है जिसका कोई अंत नहीं है। यह हमारे छोटे से छोटे उपकरण मोबाईल फोन तक में समाया हुआ है। जिसका प्रयोग कहीं भी किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हम जिस मिडीया की बात कर रहे है, जिससे पता चलता 150 मिलियन लोग फेसबुक के जरिए संपर्क में रहते है, जिसके चलते वह छायाचित्र, वीडीओ और दैनिक जीवन की गतीविधियों की सांझा करते है। 16 मिलियन लोग मायक्रो ब्लॉगिंग सर्विस ट्विटर से जुड़े हुए हैं। फेसबुक के सक्रिय उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 60 करोड़ है। इसके सर्वाधिक उपयोगकर्ता अमेरिकी है। एक सर्वे में पाया गया कि 41.6 फ़ीसदी अमेरिकियों के पास फेसबुक खाता है। सोशल मीड़िया का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि समाज का हर व्यक्ति सोशल मीड़िया का प्रयोग कर रहा है। समाज के हर वर्ग के लिए सोशल मीड़िया से इतना प्रभावीत हूआ की अपना ब्लॉग ही सोशल मीड़िया पर बना लिए है। परिणाम यह कि सोशल मीड़िया का प्रयोग गलत कार्यों में ज्यादा होने लगा हैं। अधिकतर युवा वर्ग काम के लिए कम, अन्य गलत कार्यों के लिए इसका प्रयोग ज्यादा कर रहे हैं। अधिकतर छात्रों ने अपने ब्लॉग

बना लिए है। सोशल मीड़िया के गुण और दोषों दोनों है जहाँ एक सोशल मीड़िया इन्सान को सामाजिक बनाती है और यह मीड़िया सामाजिक सरोकार बनाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के व्दारा सोशल मीड़िया का सामाजिक परिणाम और सामाजिक बदलाव होने लगे है। इंटरनेट की काल्पनिक दुनिया से जहाँ इन्सान को एक व्यापक सामाजिक दायरा मिलता है, डेनिस मॅकविल कहते है कि "मीड़िया यह समाज परिवर्तन की यंत्रशक्ती है।" सोशल मीड़िया के व्दारा सामाजिक परिवर्तन का कार्य किया जाता है। वही कुछ असामाजिक लोगों व्दारा कुछ अदृष्य सामग्री मीड़िया पर डालने से सोशल मीड़िया का अधिकतर उपयोग करनेवाली युवा पीढ़ी दूसरी दिशा की ओर भटक जाती है। नई - नई जानकारियाँ, ज्ञान, समाचार, मनोरंजन के चलते सोशल मीड़िया का प्रयोग बहुत बढ़ गया है। फेसबुक , ट्विटर, ऑरकुट, फैंडस्टर हाईड , माईस्पेस जैसी बहुत-सी ऐसी सोशल नेटवर्किंग साईटस है जिनका प्रयोग पत्रकार , बुध्दिजीवी वर्ग, राजनेता, अभिनेता और आम आदमी अपने विचार नई जानकारियाँ दूसरों के साथ सांझा कर रहे हैं। जिसे एक नए ज्ञान भांडार का सूत्रपात हो रहा है। अरब क्रांती तथा अन्ना आंदोलन और लोकपाल के बारे में वैचारिक मंथन सोशल मीड़िया के बिना सोशल मीड़िया और न्यू मीड़िया की महत्ता को समझा गया। वर्तमान में युवा पिढ़ी की बात की जाएँ तो वह इस प्रकार सोशल मीड़िया से जुड़ गया है कि सोशल मीड़िया को समय व्यतीत करने का सबसे अच्छा साधन मानता है। अधिकतर युवा वर्ग ही है जो सोशल मीड़िया को बढ़ावा दे रहे है। लैपटॅाप, आयफोन, ऑयपॅाड या कम्प्यूटर साथ में रखते है और मोबाईल इंटरनेट फोन या डाटा कार्ड के व्दारा इंटरनेट चलाकर प्रयोग कर रहे है। यह एक तरह से गलत प्रवृत्ती को जन्म दे रहा है इसी मुम्बई निवासी मैलोडी लैला को अप्रैल 2008 में पता लगा कि वो इस ऑनलाईन जालसाजी का शिकार हो चुकी है, जब उनके एक दोस्त ने उन्हें बताया कि किसी ने जोयी बिन्दास नाम से उनकी प्रोफाईल बना रखी है। परेशानी यही है कि ज्यादातर ऑनलाईन सोशल मीड़िया सेवाएँ इस बात की पड़ताल करने की कोशिश ही नहीं करती है कि जिस नाम से अकाऊंट बनाया है उस पर जो तस्वींरे इस्तेमाल की गयी है, क्या वे वाकई में उसी इंसान की है। सोशल मीड़िया के व्दारा कोई भी गलत अकाऊंट बनाकर अन्य किसी को भी गलत संदेश, मैसेज, या तस्वीर भेजी जा सकती है और भेजने वालों का पता लगाना मुश्कील हो जाता है। कई ऐसी सोशल नेटवर्किंग साईट्स है जो गलत पाठकों को परोस रही है और प्रतिबंधित साईटों के लिए भी ऐसे सॉफ्टवेअर का निर्माण कर दिया है कि इनको भी आसानी से खोला जा सकता है। कई सोशल मीड़िया वेबसाईट ने ऐसे विचार डाले जिनसे बड़े-बड़े हंगामे हुए। लेकिन भी सोशल नेटवर्किंग जो लोग शर्मिली प्रवृत्ती के है, उनके लिए सोशल मीड़िया खुद को अभिव्यक्त करने का बेहतर माध्यम है। फ्री एसएमएस सोशल मीड़िया का वर्तमान में जितना प्रयोग गलत कार्यो में ज्यादा होने लगा है। सोशल मीड़िया का लोगों व्दारा फायदा भी उठाया जा रहा है। सोशल मीड़िया व्दारा निजी जानकारियाँ लिक हो रही है। फेसबुक ने तो इसको माना भी है। हाल ही में किसी ने अमर्त्यसेन के नाम से जानी -मानी सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक पर अकाऊंट बनाकर न सिर्फ लोगों से बात की, बल्कि अमर्त्यसेन बनकर लोगों के सवालों के जवाब दिए

और ऐसी बातें कहीं, जो डॉ. अमर्त्य सेन के विचारों से बिल्कुल भी मेल नही खाती थी। स्टार इंडिया के सीईओ उदय शंकर का हाल में किसी ने फेसबुक पर फर्जी प्रोफाईल बनाकर मीड़िया व्दारा समुह के विस्तार की घोषणा कर दी। कॉर्पोरेट दलाल मीरा राडिया और नेताओं, अफसरों और पत्रकारों की बातचीत टेप यू-टयूब और फेसबुक पर डाल दिए जिसे डाऊनलोड करके लाखों लोगों ने जाना इसी तरह सोशल मीड़िया का उपयोग किया जा रहा है। फेसबुक पर एक युवती के संदेश ने लीबीया में क्रांति का सुत्रपात कर दिया।

साईटस् धडल्ले से अनुचित सामग्री परोस रही है। सोशल मीड़िया ने चीन से शुरु चमेली क्रांति (जैस्मीन रिवोल्यूशन) की सुगंध कुछ दिनों में पूरे मध्य एशिया में फैल गयी और वहाँ दशकों से सत्ता पर कब्जा किये होस्नी मुबारक और गदाफी सरीखे ताकतवार तानाशाहों का शासन हिला कर रख दिया। इसका प्रमाण जब मिला तब फेसबुक पर ओसामा के घर किए गये हमले और उसकी हत्या की तस्वीरें, समाचार फेसबुक , यू-टयूब पर दिखाई गयी। पर उन सभी ने राष्ट्रपती ओबामा व्दारा खबर के औपचारिक राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारण के बाद ही देने की सरकारी अनुरोध का मान रखा दूसरी ओर सोशल मीड़िया ने अपना काम किया और अनुमान के आधार पर रात 10.30 पर एबटोबाद (पाकिस्तान) के किसी व्यक्तीने अमेरिका व्दारा ओसामा पर किये हमले और ओसामा की मौत की जानकारी को फेसबुक पर डाल दिया। जब तक अमेरिकी राष्ट्रपती बराक ओबामा विधिवत रुप से ओसामा की मौत की योजना करते उससे दो घंटे पहले यह जानकारी पूरी दुनिया में आग की तरह फैल चुकी थी। दुनिया भर के मोबाईल फोन सूचना को इधर-उधर इतनी तेजीसे फैल रहे थे जिसका अंदाजा या कयास लगाना मुश्किल है टेलीविजन पर यह समाचार प्रसारीत होने से 20 मिनिट पहले यह खबर ट्विटर पर आ चुकी थी। दैनिक भास्कर में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार फेसबुक और ट्विटर जैसी सोशल मीड़िया ने अधिकतर युवाओं को आपस में जोड़ने का काम किया है। सोशल मीड़िया मनोरंजन खबरों का अच्छा माध्यम है। सोशल मीड़िया वेबसाईटों की संख्या तीन सौ से ज्यादा हो गयी है। जिनमें ऑरकूट, फेसबुक, यू-टयुब, माइसस्पेस प्रमुख है। भारत में बिग अड्डा, टैगड, इबिबो,हाई फाईव और मिगलबाक्स का प्रयोग ज्यादा होता है। एक ओर जहाँ सोशल मीड़िया छात्रों के लिए अनिवार्य कर दी है। कई विश्वविद्यालय है जिनका कैंपस वाई-फाई है। वहाँ छात्र इन साईट्स का प्रयोग कॉलेज कार्य के लिए जब कि गलत कार्य को रोकने के लिए इन विश्वविद्यालयों ने कई सोशल मीड़िया साइट्स पर प्रतिबंध लगा दिया है। कई देश ऐसे है जिन्होने सोशल मीड़िया साइट्स पर प्रतिबंध किया हुआ है। क्योंकि वहाँ पर उनका लगत प्रयोग ज्यादा होने लगा था। जिसके चलते वहाँ की सरकार ने पूर्णत: वहाँ पर सोशल मीड़िया का प्रयोग कर दिया है। मनोवैज्ञानिक और पोलिस विश्लेषज्ञ का कहना है कि असुरक्षित एकाकी महसूस करनेवाले लोगों और डिप्रेशन के मरीजों की तादाद लगातार बढ़ रही है। जाहीर है कि ताण-तणाव को कम करने के लिए पति-पत्नी, बेटे-बेटियाँ फेसबुक, टिवटर पर जाकर संवाद करने लगे है और बच्चों के बीच उठना बैठना और अंतरंग संवाद गायब हो रहा है। आज सोशल मीड़िया का दायरा इतना

व्यापक होता जा रहा है कि इसको सीमित करना मुश्किल कार्य है। सोशल नेटवर्किंग साईट्स यह एक इंटरनेट का इंद्रजाल है। सूचना क्रांती की लहर पर भारत भी सवार है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में शासक नागरिकों की ऑनलाईन अभिव्यक्ति पर आचारसंहिता व्दारा कानून के तहत नियंत्रण करना चाहती है। सूचना तकनिक अधिनियम २००९ के प्रस्तावित मसौदा को देखकर लगता है कि आखीर ब्लॉग पर लिखे कंटेट को लेकर इतनी चिंता क्यों, सरकार कानून के तहत ब्लॉग, फेसबुक, टिवीटर जैसी सोशल नेटवकिंग साइटपर नियंत्रण लाना चाहता है। पूरे विश्व में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की कुल संख्या 100 करोड़ है जहाँ फेसबुक का सवाल है दुनिया में इसके 75 करोड़ उपयोगकर्ता है भारत में फेसबुक का इस्तेमाल करनेवालों की संख्या 3.3 करोड़ है। जहाँ गुगल प्लस का सवाल है, दुनिया में उपयोगकर्ता २ करोड़ से अधिक है और भारत में 30 लाख है टिवटर पर ध्यान दे तो हम पायेंगे कि दुनिया में १० करोड़ लोग है जब कि भारत में उपयोग करनेवालों की संख्या 1.3 करोड़ है। फेसबुक, ट्विटर का इस्तेमाल करनेवालों की संख्या बड़ी तेजीसे बढ़ रही है।

निष्कर्ष :-

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में मीड़िया का अनुशासित और सुगठित होना जरुरी है किन्तु इस संदर्भ में समाचार चैनलों एवं इंटरनेट मीड़िया, सोशल मीड़िया ने सेल्फ रेग्युलेशन तैयार करने की आवश्यकता है। जब कि टेलीविजन ज्योतिष और अंधविश्वास दिखाकर लोगों को दकियाणूस बना रहा है, जब की उसे तार्किक और वैज्ञानिक सोच को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। सभी इलेक्ट्रॉनिक्स मीड़िया, न्यु मीड़िया को मीड़िया कौन्सिल के दायरे में रखने से समस्या का समाधान खत्म नहीं होगा। आज एक और प्रभावशाली माध्यम न्यु मीड़िया के रुप में हमारे समक्ष आ गया है, इस पर भी अंकुश लगाना आवश्यक है। इंटरनेट न्यू मीड़िया को आम आदमी, जनता के प्रहज जबाबदेह बनाना होगा। सूचना प्रौद्योगिकी टेक्नॉलॉजी के युग में, इंटरनेट मोबाईल, न्यु मीड़िया पर सूचनाओं के दूरप्रयोग का खतरा है, फोटोग्राफी और विडीयो के साथ छेड़-छाड की जाती है और इससे अश्लीलता को बढ़ावा मिलता है इसलिए सरकार न्यु मीड़िया पर अंकुश लगाना चाहती है। यदी खूद जनमीड़िया,न्यु-मीड़िया तकनिक का उपयोग करते समय आचार संहिता के दायरे में प्रसारण करें एवं सामग्री प्रकाशित करें यह सशक्त लोकतंत्र के बहुत जरुरी है।

संदर्भ सूची :

१. मॉर्शल मॅकलूहन - अंडरस्टॅंडिंग मीड़िया, रुटलेज प्रकाशन लंडन,1964,
२. फिलिप सेईब - बियोंड द फ्रंट लाईन हाऊ द न्यु मिडीया कवर ए वर्ल्डशेप्ड बाय वार के अध्याय, सायबर न्युजः सायबर वार, द इंटरनेट एज टूल एंड बेट्ल ग्राऊंड 2004 पृ.88.
३. शेफाली आनंद - फ्राम एटोबाबाद द लाईव्ह टिविटिंग द बिन लोदन अॅटैक वॉल स्ट्रीट जर्नल 2 मई 2011
४. मिडीया मोमांसा - जुलाई-सितंबर 2008, पत्रकारीता एवं जनसंचार विश्व विद्यालय , भोपाल.
५. माथुरशाम - वेब पत्रकारीता, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर.

६. संचार माध्यम - भारतीय जनसंचार संस्थान, अप्रैल जुन 1997, खंड 14, अंक-2.
७. संचारश्री - शोध पत्रकारीता जुलाई-सितंबर 2008, पत्रकारीता एवं जनसंचार विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय.लखनऊ.
८. डॉ. सुशिल त्रिवेदी- इक्कीसवीं सदी का संचार, मीड़िया विमर्श पत्रिका-अक्टूबर - दिसंबर 2011, भोपाल.
९. केवल जे कुमार - मास कम्युनिकेशन इन इंडिया, जयको पब्लीकेशन, मुम्बई 2002.
१०. पी.के.आर्य - इलेक्ट्रॉनिक्स मीड़िया, प्रतिभा प्रतिष्ठान नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2007.